डी.ए.वी. गान

अविरल निर्मल सलिल सदय,
ज्ञान प्रदायिनी ज्योतिर्मय।
हो चहुँदिशि उद्घोष अभय,
डी.ए.वी. जय-जय।।2

प्रबल प्रवाहमयी नित-नूतन,
जीवनदायिनी सदा सनातन।
वेद प्रणीता,
परम पुनीता,
ये धारा अक्षय।
डी.ए.वी. जय-जय।।
दयानंद से प्रेम भक्ति ले,
हंसराज से त्याग शक्ति ले,
धर्म भक्ति का, राष्ट्र शक्ति का
हो दिनमान उदय।
डी.ए.वी. जय-जय।।
सुख-समृद्धि इसकी लहरें,
प्रेम-शांति इसके तट ठहरें।
सघन शांतिमय,
प्रबल कांतिमय,
लिए अटल निश्चय।
डी.ए.वी. जय-जय।।

● ● ●

अनुक्रम

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	गायत्री मंत्र	1
2.	सत्य की राह	2-8
3.	हर एक में तू, हर रूप में तू	9-16
4.	वो दस मिनट	17-26
5.	मुझमें भी गुण हैं	27-33
6.	सफलता की राह	34-41
7.	स्वामी श्रद्धानंद	42-49
8.	व्याकुल श्रीधर	50-57
9.	हुआ तो अच्छा, नहीं हुआ तो और भी अच्छा	58-64
10.	आम का पेड़	65-73
11.	अभिनंदन का अभिनंदन	74-80
12.	अनोखी चिकित्सा	81-87
13.	यही जीवन है	88-99
❖	आर्यसमाज के नियम	100

1 गायत्री मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्।।

ओंकार प्रभु नाम तेरा,

गुण गाए संसार तेरा।

प्राणस्वरूप प्राणों से प्यारा,

दूर दुःखों को करने वाला।

सुखस्वरूप सुखों का दाता,

अंत तुम्हारा कोई न पाता

सारे जग को पैदा करता,

सबसे उत्तम, पाप को हरता।

हे! ईश्वर हम शीश नवाएँ,

पाप कर्म के पास न जाएँ।

बुद्धि हमारी करो उज्ज्वल,

जीवन हो हमारा निर्मल।

2 सत्य की राह

बच्चो! अगर आपको कभी सड़क से गुज़रते समय एक हीरा सड़क पर पड़ा दिखाई दे तो आप क्या करेंगे? आप सोच रहे होंगे, भला इसमें पूछने की क्या बात है? स्वाभाविक है, मैं उसे उठा लूँगा और उसे बेचकर जो धन प्राप्त होगा उससे अपने अनगिनत सपने पूरे करूँगा।

मैं जानती हूँ शायद आप अभी तक अपने उन सपनों में खो भी चुके हों, जिन्हें आप उस प्राप्त धन से पूरा करना चाहेंगे; या यह भी संभव है कि आप में से कुछ यह सोच रहे हों कि आखिर अचानक से यह प्रश्न क्यों? तो चलो, आपकी जिज्ञासा शांत करने के लिए बता दूँ कि ऐसा ही एक प्रश्न बहुत साल पहले एक अध्यापक ने अपनी कक्षा में भी पूछा था। यह अध्यापक महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव के विद्यालय में पढ़ाते थे। उन्होंने जब यह प्रश्न अपनी कक्षा में पूछा, तो आप ही की तरह बहुत सारे बच्चों ने उत्तर दिया कि उस हीरे को बेचकर जो धन प्राप्त होगा उससे वे अपने उन सपनों को पूरा करेंगे जिन्हें पूरा करने के लिए उनके पास अभी पर्याप्त धन नहीं है।

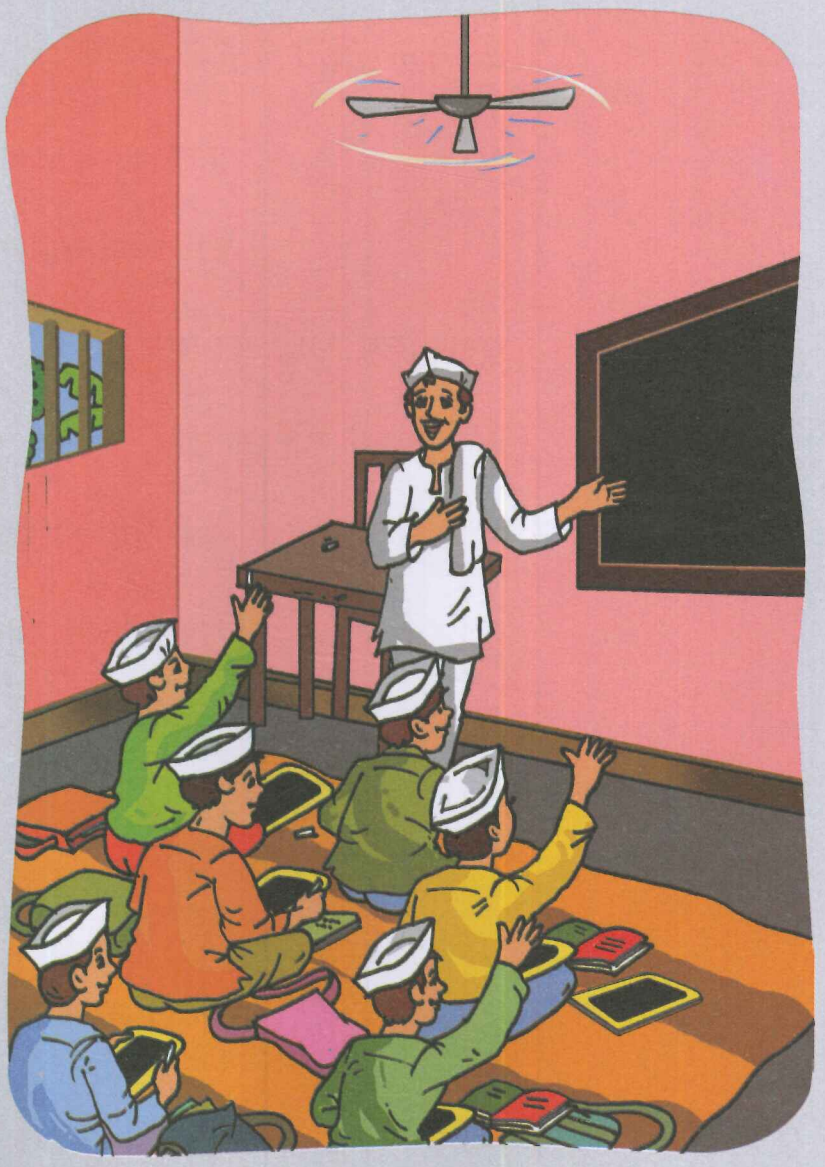

उसी कक्षा में गोपाल नाम का एक छात्र भी पढ़ता था। वह बहुत ध्यान से अपने सहपाठियों की बातें सुन रहा था।

सत्य की राह

जब अध्यापक ने गोपाल से पूछा कि वह उस हीरे का क्या करेगा; तो गोपाल ने उत्तर दिया कि वह उस हीरे के मालिक का पता लगाने की कोशिश करेगा ताकि वह उसे हीरा लौटा सके।

अध्यापक गोपाल का उत्तर सुनकर चकित रह गए। उन्होंने उससे फिर पूछा, "अगर मालिक का पता ही न चल पाए तो वह क्या करेगा?"

गोपाल ने उत्तर दिया कि तब वह उस हीरे को बेचकर उससे जो धन प्राप्त होगा, उसे देशसेवा में लगा देगा।

शिक्षक, गोपाल का उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए फिर भी अध्यापक के मन में गोपाल की ईमानदारी और सच्चाई को लेकर कहीं शंका थी इसलिए उन्होंने गोपाल को आजमाने की सोची।

उस दिन अध्यापक ने सभी छात्रों को बिना किसी की सहायता लिए गणित का एक प्रश्न हल करने के लिए दिया। प्रश्न कठिन था इसलिए कोई बच्चा उसका हल नहीं ढूँढ़ पा रहा था। अध्यापक भी यह भलीभाँति जानते थे कि प्रश्न का हल निकालना बच्चों के लिए कठिन है। हालाँकि वे यह भी जानते थे कि कृष्णकांत जो उसी कक्षा में पढ़ता था शायद उस प्रश्न का हल निकाल सके।

कुछ देर बाद गोपाल उस प्रश्न का हल ढूँढ़ लाया।

अध्यापक ने प्रसन्न होकर गोपाल को पुरस्कृत किया तथा साथ ही यह भी जानना चाहा कि उसने इस प्रश्न का हल कैसे निकाला? तभी विद्यालय की घंटी बज गई। विद्यालय की छुट्टी होते ही सारे छात्र घर जाने के लिए दौड़ पड़े। उधर अध्यापक जी को भी प्रधानाध्यापक ने तुरंत मिलने के लिए बुला लिया। अत: गोपाल को पुरस्कार पकड़ाकर अध्यापक जी प्रधानाध्यापक के कमरे की तरफ़ चले गए।

गोपाल पुरस्कार लेकर अपने घर की तरफ़ चल दिया परंतु अध्यापक जी को यह न बता पाने के कारण कि उसने इस प्रश्न का हल कैसे निकाला, वह मन-ही-मन बहुत निराश था। उसके मन में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद भी कोई खुशी नहीं थी। उसे लग रहा था कि वह इस पुरस्कार का सच्चा अधिकारी नहीं है। रह-रहकर उसके मन में विचार आ रहे थे कि उसने सबको धोखा दिया है। रातभर वह यही सोचता रहा कि क्या उसे यह पुरस्कार लेना चाहिए था? कभी उसके मन में विचार आता कि वह सुबह होते ही विद्यालय जाकर इस पुरस्कार को वापस कर देगा; हो सकता है अध्यापक जी उस पर नाराज़ हों तथा अन्य छात्र उसको झूठा कहें परंतु वह सच ज़रूर बताएगा। कभी वह सोचता कि अगर वह सच ना भी बताए तो कौन-सा कृष्णकांत मास्टरजी को कुछ बोलेगा; पुरस्कार तो उसे मिल ही चुका है। यही सोचते-सोचते सुबह हो गई।

सत्य की राह

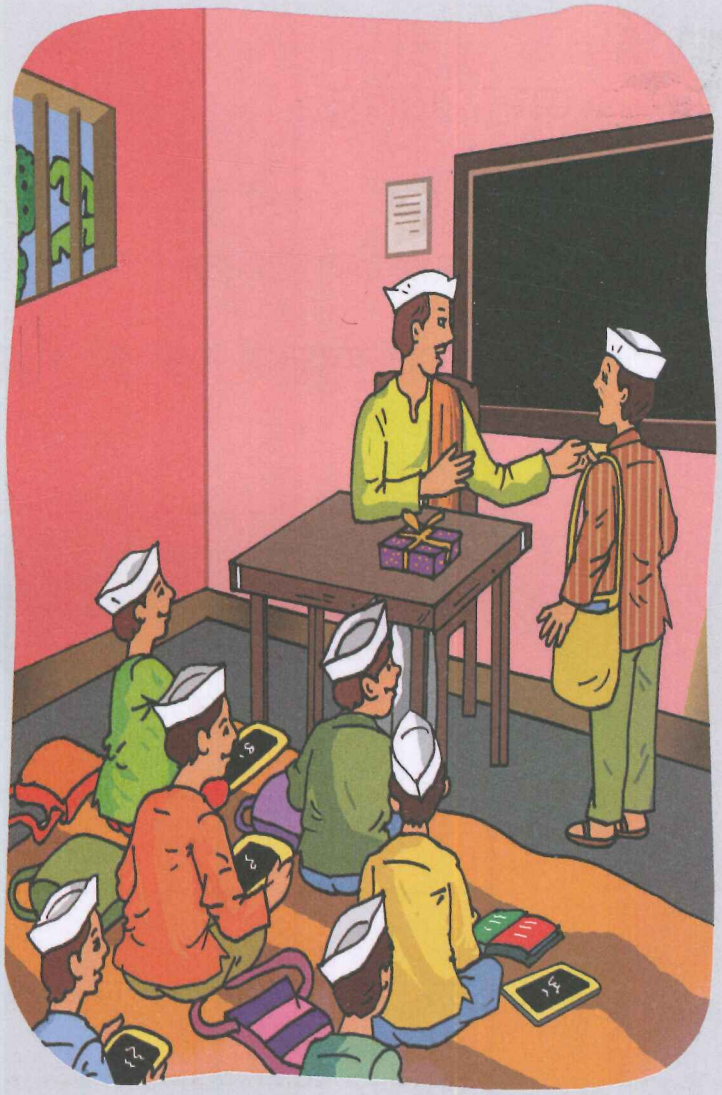

विद्यालय पहुँचते ही गोपाल अध्यापक के पास जा पहुँचा और उन्हें पुरस्कार वापस करते हुए बोला कि वह इस पुरस्कार का सच्चा अधिकारी नहीं है क्योंकि गणित का प्रश्न उसने अकेले हल नहीं किया था बल्कि उसने अपने सहपाठी कृष्णकांत की सहायता से इस प्रश्न का हल निकाला था। इसलिए इस पुरस्कार का सच्चा अधिकारी उसका सहपाठी भी है। गोपाल अध्यापक से विनती करते हुए बोला कि इसी कारण वह रातभर सो नहीं पाया है। इसलिए यह पुरस्कार कृष्णकांत को दे दिया जाए।

अध्यापक गोपाल की सच्चाई और ईमानदारी को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें गोपाल पर बहुत गर्व हुआ। गोपाल की प्रशंसा करते हुए वह अन्य विद्यार्थियों से बोले कि उन्हें भी गोपाल की तरह ही सच्चाई की राह पर चलना चाहिए। वे विद्यार्थियों को आगे समझाते हुए बोले कि बहुत मुमकिन है कि कई बार आपका झूठ न पकड़ा जाए और सच कभी सामने न आ पाए पर जो लोग सच्चाई को छुपाते हैं; वे हमेशा अशांत रहते हैं जैसे गोपाल पूरी रात रहा। इसलिए सत्य की राह पर चलना बहुत आवश्यक है।

उस दिन अध्यापक ने गोपाल की पीठ थपथपाते हुए कहा था कि वह खुद में एक हीरा है और एक दिन पूरी दुनिया इस बात को मानेगी। बच्चो, क्या आप जानते हैं कि यही छात्र आगे चलकर 'गोपाल कृष्ण गोखले' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बाल गंगाधर तिलक ने उन्हें 'भारत के हीरे' की उपाधि दी। इन्हीं गोपाल कृष्ण गोखले को महात्मा गांधी जी ने अपना गुरु माना था।

ज़रा सोचिए

प्रश्न 1: हम सब कभी-न-कभी झूठ बोलते हैं। अपने माता-पिता से बातचीत करके जानने का प्रयास कीजिए कि क्या-

(क) उन्होंने बचपन में कभी झूठ बोला? जिसके कारण उन्हें बाद में डाँट या मार पड़ी हो।

.....

.....

(ख) उनसे किसी दूसरे व्यक्ति ने झूठ बोला?

.....

.....

(ग) उन्हें जब उस झूठ का पता लगा तो उन्हें कैसा लगा?

.....

.....

.....

(घ) उन्होंने उस व्यक्ति से कैसा व्यवहार किया?

.....

.....

.....

प्रश्न 2: हम सभी कई बार बिना किसी कारण और कई बार कारणवश झूठ बोलते हैं। ऐसी दो बातें या दो घटनाएँ लिखिए जब आपको झूठ बोलना पड़ा हो। ये झूठ आपने क्यों बोले?

कारण जैसे- घबराकर, मार या डाँट के डर से, आनन्द पाने के लिए, दूसरों को तंग करने के लिए आदि।

	बात / घटना	कारण
(क)		
(ख)		

प्रश्न 3: आपका एक मित्र अपने माता-पिता से झूठ बोलकर प्रतिदिन मॉल घूमने जाता है। उसके माता-पिता सोचते हैं कि वो आपके घर में आपके साथ पढ़ रहा है। परंतु वह आपके घर आता ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में क्या आप उसका साथ देंगे या उसे समझाएँगे। अपने विचार नीचे दिए गए रिक्तस्थान में लिखिए।

.....

.....

.....

प्रश्न 4: मानक के पिता फ़ौजी हैं और देश की सीमाओं की रक्षा करने के लिए सीमा पर तैनात हैं। उन्होंने सांकेतिक भाषा में मानक को एक पत्र लिखा है। आइए, मानक की सहायता करके इस संदेश को जानने का प्रयास करें।

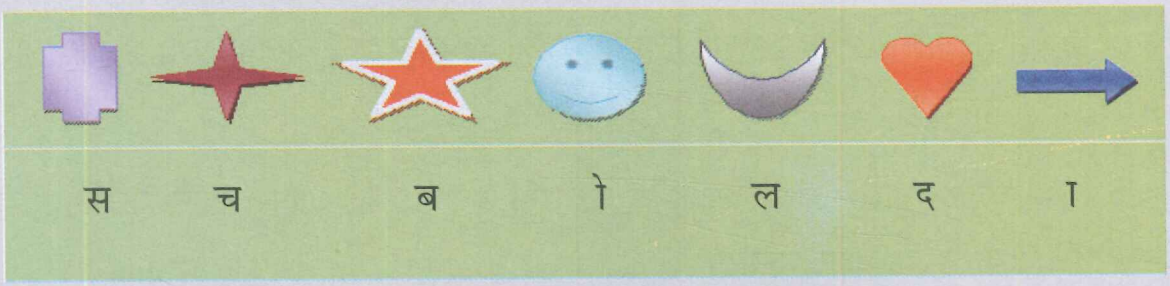

(हर चित्र एक वर्ण के लिए है। वर्ण को ढूँढ़कर संदेश का पता लगाइए)

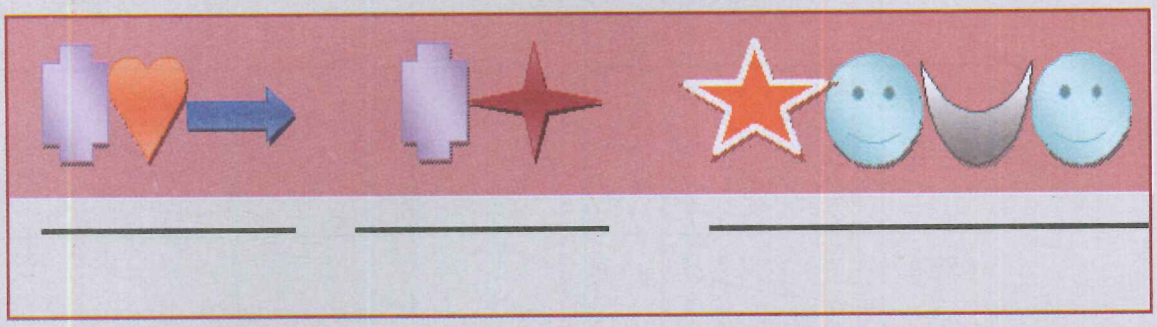

आओ इसे अपने जीवन में उतारें

क्या आज आपने झूठ बोला? एक सप्ताह तक हर शाम को सोने से पहले सोचिए कि क्या आपने झूठ का सहारा लिया? यदि हाँ, तो क्यों? जहाँ तक संभव हो अगले दिन उस व्यक्ति को जाकर सत्य बताइए जिससे आपने झूठ बोला हो। अपने इस झूठ के लिए उससे क्षमा भी माँगिए।

आओ खोजें

गांधी जी बचपन से ही सत्य के पुजारी थे। उनके बचपन के जीवन से कोई तीन उदाहरण खोजिए जहाँ उन्होंने अनेक कष्ट मिलने पर भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। अपने मित्रों के साथ इन उदाहरणों पर चर्चा कीजिए।

3 हर एक में तू, हर रूप में तू

यह कहानी उन दिनों की है जब मैं अपने दादा-दादी के साथ नैनीताल में रहता था। मैं दस साल का था और अक्सर अपना अधिकतर समय दादाजी के साथ ही बिताता था। उनके साथ समय बिताना, बातें करना, घूमना-फिरना, खाना खाना मुझे बहुत अच्छा लगता था।

ऐसे ही एक दिन, मैं दादाजी के साथ बैठा टी०वी० देख रहा था। मेरे दादाजी आध्यात्मिक विचारों के थे और अक्सर टी०वी० पर साधु-संन्यासियों के प्रवचन सुनते रहते थे।

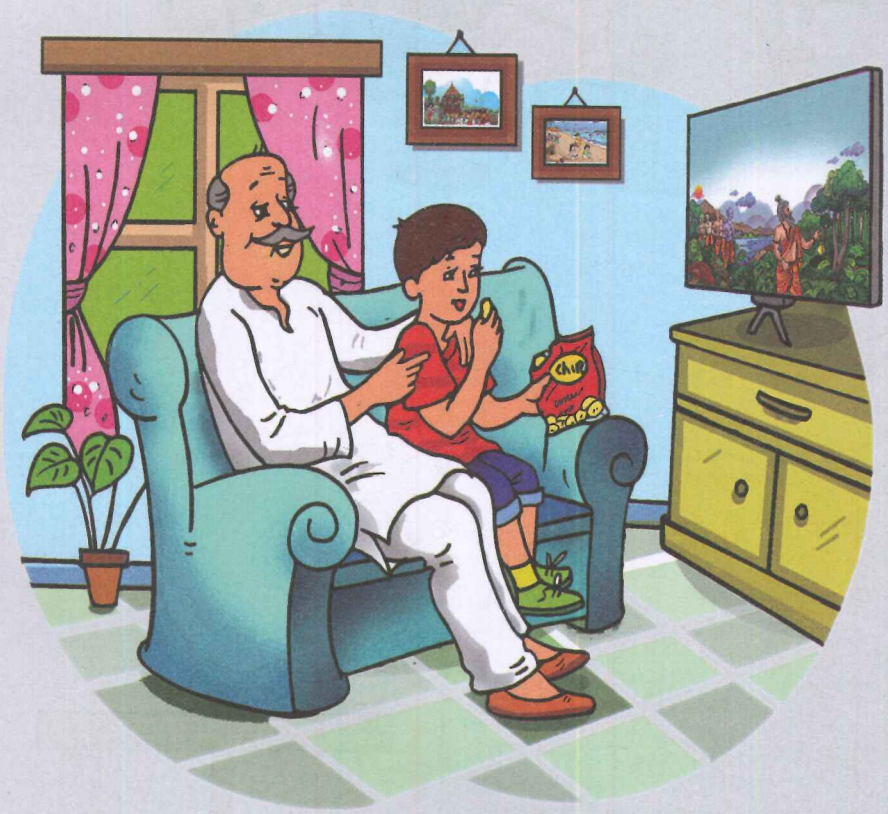

उस दिन भी दादाजी टी०वी० पर कोई प्रवचन सुन रहे थे। उस प्रवचन में मैंने एक साधु को बोलते सुना, "क्यों व्यर्थ परेशान होते हो, परमात्मा सब कुछ जानता है और सब देखता है। उससे कोई बात छिपी हुई नहीं है। वह हमारे भले-बुरे कामों को देखता है और उसी के अनुसार हमें फल देता है।" यह सुनकर मैं हैरान रह गया। मैं सोचने लगा, "ईश्वर कहाँ है?" अगर वह हमें देख रहा है, सुन रहा है तो वह मुझे दिखाई क्यों नहीं दे रहा? मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था। मैंने दादाजी की तरफ़ देखा।

दादाजी मेरा चेहरा देखते ही समझ गए कि मैं कुछ पूछना चाहता हूँ। टी०वी० की आवाज़ कम करते हुए दादाजी बोले- "पूछो, क्या पूछना चाहते हो?"

हर एक में तू, हर रूप में तू

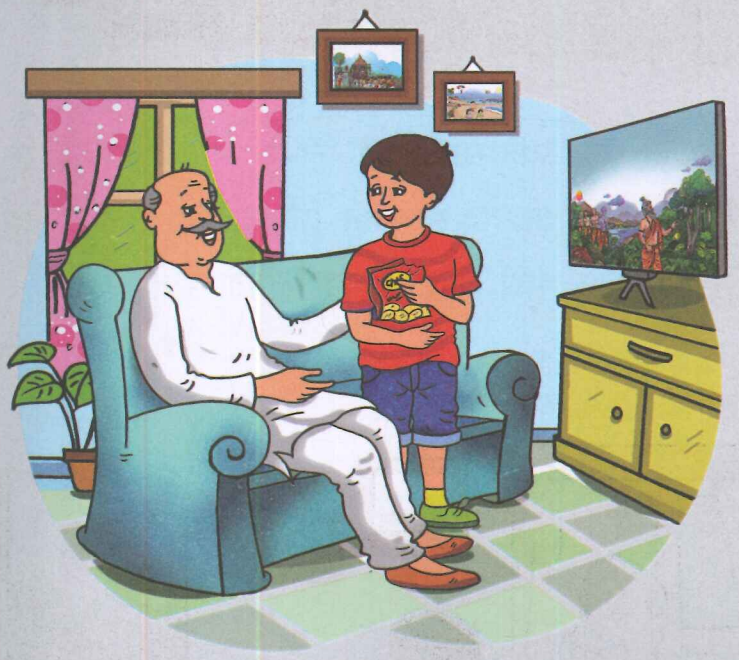

मैंने तुरंत साधु जी की बात दोहराते हुए पूछा- "दादाजी, अगर ईश्वर हमें सुन सकता है, देख सकता है, तो वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता? ईश्वर कहाँ है? वह कहाँ रहता है? उससे कैसे मिला जा सकता है?"

दादाजी मेरी बात सुनकर ज़ोर से हँस दिए। फिर कुछ सोचते हुए बोले- "बेटा, ईश्वर तो सब जगह है, वह संसार के कण-कण में रहता है पर वह निराकार है इसलिए हमें दिखाई नहीं देता और ना ही सुनाई देता है। ईश्वर को तो केवल महसूस किया जा सकता है।"

मैं दादाजी की बात सुनकर और भी हैरान-परेशान हो गया। महसूस कर सकते हैं, भला कैसे? मैंने दादाजी से फिर कहा कि वह मुझे बताएँ कि ईश्वर को कैसे महसूस किया जा सकता है? मैं भी महसूस करना चाहता हूँ।

दादाजी मेरा हाथ पकड़कर मुझे मेज़ की तरफ़ ले गए और मुझे कुर्सी पर बिठाते हुए बोले - "आओ, तुम्हें कुछ दिखलाता हूँ।"

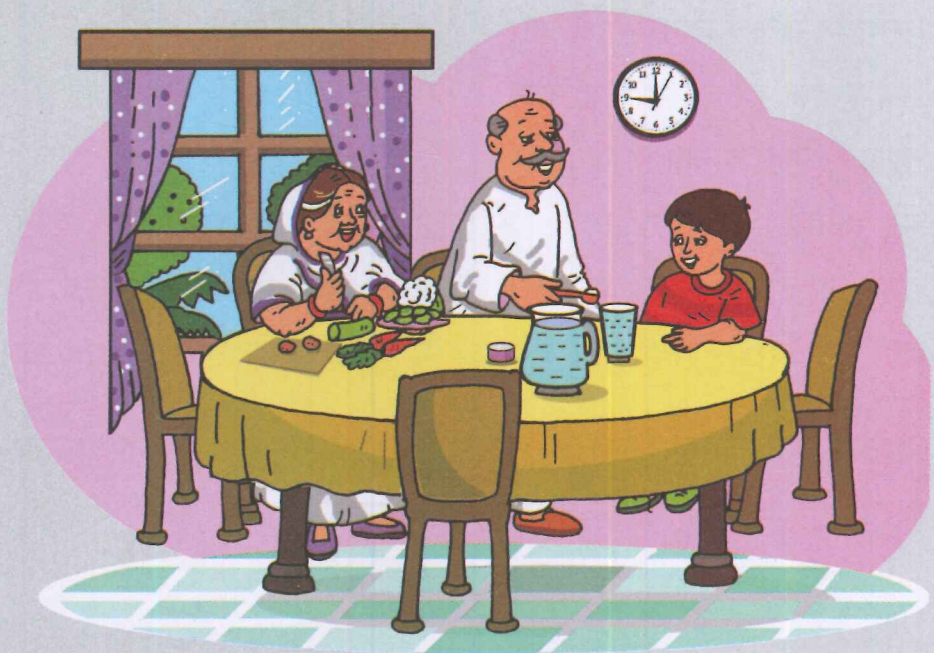

दादाजी ने एक गिलास में जग से पानी डाला और एक चम्मच नमक उस गिलास में डाल

दिया। फिर मुझसे बोले- "क्या तुम इस गिलास के अंदर नमक देख सकते हो?"

मैंने ध्यान से देखते हुए कहा- "हाँ, थोड़ा तो दिख रहा है।"

दादाजी ने पानी को चम्मच से हिलाया जब तक कि नमक पानी में पूरी तरह घुल नहीं गया। मुझे फिर से गिलास दिखाते हुए बोले- "और क्या, अब तुम नमक को देख सकते हो?"

मैंने गिलास को ध्यान से देखते हुए कहा- "अब नहीं दिख रहा।"

दादाजी ने मुझसे फिर पूछा- "नमक कहाँ गया?"

मैंने कहा - "वह तो पानी में घुल गया।"

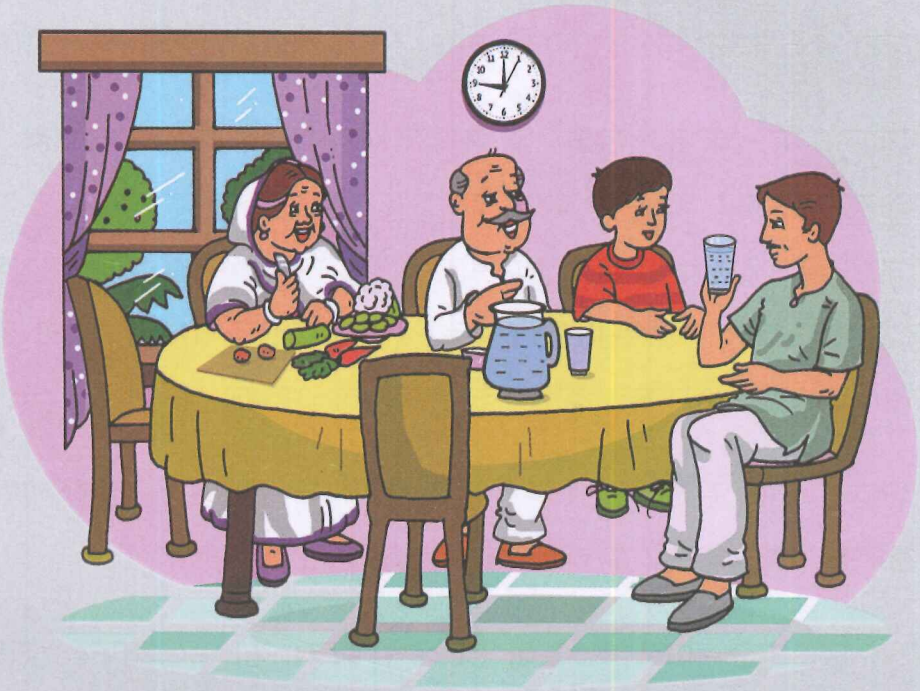

दादाजी ने फिर पूछा - "क्या तुम नमक को देख सकते हो?"

मैं झुँझलाते हुए बोला - "दादाजी, नमक तो पानी में घुल गया है, भला अब उसे कैसे देखा जा सकता है?"

तभी पिताजी जो अभी तक हमारी बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे, गिलास को हाथ में उठाते हुए बोले- "ठीक है! देखा तो नहीं जा सकता पर यह तो बता सकते हो ना कि इस पानी का स्वाद कैसा होगा?"

मैं तुरंत बोला- "इसमें भला पूछने की क्या बात है; नमक मिलाया है तो नमकीन ही होगा।"

दादाजी हँसते हुए बोले - "बेटा, जैसे इस नमक को हम देख नहीं सकते पर पानी की हर

बूँद में इसका स्वाद है उसी प्रकार परमात्मा भी संसार की हर वस्तु में है। उसे केवल महसूस किया जा सकता है तथा सबका भला करके उसे प्राप्त किया जा सकता है।"

"तुमने अभी कहा ना कि नमक मिलाया है तो पानी का स्वाद नमकीन ही होगा। उसी प्रकार परमात्मा भी हमारे भले-बुरे कर्मों के हिसाब से हमें फल देता है। अगर हम अच्छे कर्म करते हैं तो उसका परिणाम भी अच्छा ही होता है। तुमने मुझसे पूछा था कि परमात्मा से कैसे मिला जा सकता है? जानते हो, परमात्मा से मिलना बहुत आसान है। हो सकता है, तुम मिल भी चुके हो।"

यह सुनकर मैं बहुत हैरान हो गया। मैं सोचने लगा कि मैं कब और कहाँ परमात्मा से मिल चुका हूँ? कभी-कभी दादाजी और उनकी बातें मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आती थीं।

दादाजी मेरा चेहरा देखकर ही समझ गए कि मैं क्या सोच रहा हूँ? इससे पहले मैं कुछ और बोलता दादाजी बोले- "बेटा, जब हम बहुत तकलीफ़ या कठिनाइयों से घिरे होते हैं तो ईश्वर किसी-न-किसी को हमारी सहायता के लिए भेजता है। वह व्यक्ति उस समय हमारे लिए ईश्वरतुल्य होता है। इसलिए हमें हर समय सबका सम्मान करना चाहिए, सबसे प्रेमपूर्वक मिलना चाहिए और यथासंभव दूसरों की सहायता अवश्य करनी चाहिए।"

दादाजी प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले- "तुम्हें याद है, अपने विद्यालय की वह प्रार्थना 'हर एक में तू हर रूप में तू'।"

उस दिन मुझे समझ आ गया कि हम ईश्वर को सर्वव्यापक, निराकार और सर्वशक्तिमान क्यों कहते हैं?

ज़रा सोचिए

'हाँ! ये ईश्वर ही तो है।'

प्रश्न 1: नीचे कुछ संक्षिप्त कहानियाँ दी गई हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनमें से उन व्यक्तियों को ढूँढ़ने का प्रयास कीजिए जो कहानी में ईश्वरतुल्य कहे जा सकते हैं। आप उनके किन गुणों और आचरण के कारण ऐसा मानेंगें?

(क) आकृति बगीचे में खेलते-खेलते एक पत्थर से टकराकर गिर गई। उसके सिर से खून निकलने लगा। वह दर्द के कारण खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। बगीचे में खेल रहे सभी बच्चे उसके आस-पास इकट्ठे हो गए। सब उसे देखते रहे और वह रोती रही। तभी एक बुज़ुर्ग व्यक्ति ने आकर उसे ज़मीन से उठाया और एक बेंच पर बिठाकर, पीने के लिए पानी दिया। उन्होंने एक साफ़ कपड़े से उसके सिर पर लगी चोट को पोंछा और फिर उसे सहारा देकर उसके घर तक छोड़कर आए।

.....

(ख) अनवर अपने अब्बा के साथ मोटरसाइकिल पर जा रहा था। उसके अब्बा जल्दबाज़ी में लाल बत्ती पर नहीं रुके। दूसरी तरफ़ से आ रही गाड़ी उनकी मोटरसाइकिल से आ टकराई। टक्कर इतनी ज़ोर की थी कि अनवर और उसके अब्बा सड़क पर गिर गए और उन्हें बहुत चोटें आईं। सड़क पर उनके आस-पास बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई। लोग उन्हें देखते रहे और आपस में एक-दूसरे को उनकी मदद करने के लिए कहते रहे। तभी वहाँ पर एक गाड़ी आकर रुकी। उसमें बैठे एक व्यक्ति ने उन्हें अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुँचाया। वह अस्पताल में कई घंटे उनके पास बैठा रहा और डॉक्टरों के कहे अनुसार दवाइयाँ और अन्य वस्तुएँ लाकर डॉक्टरों को देता रहा। अनवर की अम्मी को उसने फ़ोन करके अस्पताल बुलाया और उनके आने के बाद ही वह अस्पताल से गया।

.....

प्रश्न 2: "मैं भी ईश्वर हूँ।" यह कहा जाता है कि सब में ईश्वर है। आपके विचार में ईश्वरतुल्य व्यक्ति में क्या गुण होने चाहिए। नीचे दी गई सूची में से उन गुणों को चुनिए जो ईश्वरतुल्य बनाते हैं।

1. सबका आदर-सम्मान करना। ☐
2. सदा प्रसन्न रहना। ☐
3. बिना किसी भेदभाव के सबकी सहायता करना। ☐
4. सबसे लड़ना। ☐
5. सबसे प्यार से बात करना। ☐
6. अपने मतलब से लोगों से मिलना-जुलना। ☐
7. जानवरों को मारना। ☐
8. पेड़-पौधों को काटना या उगने नहीं देना। ☐
9. गंदगी फैलाना। ☐
10. गंदे रहना। ☐
11. जल को प्रदूषित करना। ☐
12. पर्यावरण को ख़राब करना। ☐
13. भेदभाव करना। ☐
14. सबके लिए दया का भाव रखना। ☐
15. लालची बनना। ☐
16. निःस्वार्थ सेवा करना। ☐

प्रश्न 3:

"हरमिलापी बनकर, दुनिया में सदा गुज़रान कर
दिल किसी का मत दुखा, हर में हरी पहचान कर।"

अपने अध्यापक से चर्चा करके इन पंक्तियों का अर्थ जानने और समझने का प्रयास कीजिए।

प्रश्न 4: निम्नलिखित परिस्थितियों को ध्यान से पढ़िए। हर परिस्थिति के नीचे कुछ विकल्प दिए गए हैं। इन विकल्पों में से जो विकल्प आपको सही लगे उसे चुनिए तथा विकल्प चुनने का कारण भी लिखिए।

(क) तपोलब्धा अपने दादाजी के साथ आम खा रही थी। एक आम थोड़ा-सा ख़राब था। दादाजी ने तपोलब्धा को उस आम का ख़राब हिस्सा फेंकने के लिए कहा। तपोलब्धा ने वह आम अपनी कामवाली बाई की बेटी को यह कहते हुए दे दिया कि यह तो सड़ा हुआ है, तुम खा लो। दादाजी को यह देख-सुनकर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने तपोलब्धा को उससे वह सड़ा आम वापस लेकर उसकी जगह उसे एक अच्छा आम देते हुए उससे माफ़ी माँगने के लिए कहा। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि-

1. वे चाहते थे कि सड़ा हुआ आम तपोलब्धा खाए। ☐
2. वे तपोलब्धा को सिखाना चाहते थे कि हर किसी में ईश्वर है, इसलिए हमें हर किसी का सम्मान करना चाहिए। ☐
3. वे उस आम को ज़मीन में गाड़ना चाहते थे ताकि आम का पेड़ बन सके। ☐
4. उन्हें किसी को भी आम देना पसंद नहीं था। ☐

(ख) नंदिनी की दादी उसे हमेशा पशु-पक्षियों की रक्षा करने, उनको दाना-पानी देने तथा उनकी सेवा करने के लिए कहती हैं। वे पेड़-पौधों में भी समय-समय पर पानी देकर तथा खाद आदि डालकर उनकी ख़ूब सेवा करती हैं वे ऐसा इसलिए करती हैं क्योंकि-

1. वे जानती हैं कि ईश्वर संसार के कण-कण में हैं इसलिए हर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी में भी ईश्वर हैं। ☐
2. उन्हें पेड़-पौधे पसंद हैं। ☐
3. उन्हें ऐसा करना पसंद है। ☐
4. वे नंदिनी को कुछ काम देना चाहती हैं। ☐

आओ इसे अपने जीवन में उतारें

"नेक बनें, सर्वश्रेष्ठ बनें"

प्रतिदिन बिना किसी लोभ-लालच के नेक कार्य अवश्य कीजिए। जैसे-

- ☞ यथाशक्ति दूसरों की सहायता करें।
- ☞ दूसरों को भला-बुरा कहने से बचें।
- ☞ किसी का भी दिल न दुखाएँ।
- ☞ सबका आदर और सम्मान करें।
- ☞ सबसे प्यार से मिलें।

याद रखिए अच्छे-बुरे कर्मों का फल हमेशा मिलता है।

आओ खोजें

खोजकर लिखिए कि आर्यसमाज के कौन-से नियम पर यह कहानी आधारित है। नियम को कंठस्थ करने का प्रयास भी कीजिए।